# ख़ुदा और हम

## दुनिया की तख़लीक़

*ḳhudā aur ham. duniyā kī taḳhlīq*

# God and Us. The Creation of the World

by Bakhtullah

[*Zinda Kalam 1*]

(Urdu—Hindi script)

© 2026 www.chashmamedia.org
*published and printed by*
GWCS, New Delhi

illus. J. Padgett
https://www.freebibleimages.org/illustrations/creation/

Bible quotations are from UGV.

*for enquiries or to request more copies:*
askandanswer786@gmail.com

# फ़हरिस्त


ख़ुदा कलाम का ख़ुदा है 2

ख़ुदा तरतीब का ख़ुदा है 3

ख़ुदा अच्छी चीज़ों का ख़ुदा है 5

ख़ुदा बरकत का ख़ुदा है 8

ख़ुदा के अच्छे नुमाइंदे हो 10

बरकत का बाइस हो 12

ख़ुदा से अच्छा रिश्ता रखो 13

आराम से काम करो 13

तौरेत, पैदाइश 1:1–2:3 15

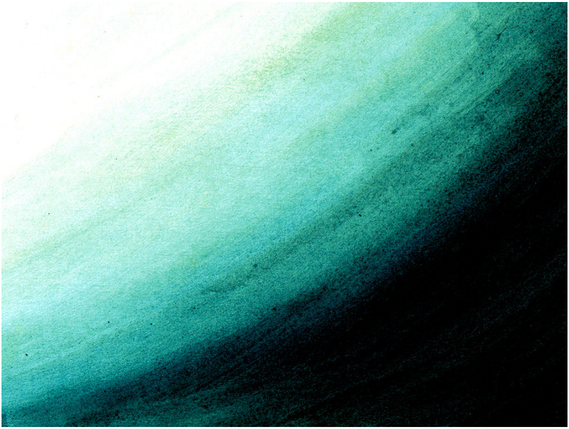

तौरेत हमें बताती है कि दुनिया किस तरह बन गई। आइए, हम इस बयान पर ध्यान दें। लिखा है,

> इब्तिदा में अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को बनाया।

► **किसने दुनिया को बनाया?**

ख़ुदा ने दुनिया को बनाया। दुनिया ख़ुद बख़ुद न बना। ख़ुदा ही ने उसे बनाया।

आगे लिखा है,

> अभी तक ज़मीन वीरान और ख़ाली थी। वह गहरे पानी से ढकी हुई थी जिसके ऊपर अंधेरा ही अंधेरा था। अल्लाह का रूह पानी के ऊपर मँडला रहा था।

► **क्या पूरी दुनिया एकदम वुजूद में आई?**

नहीं। शुरू में ज़मीन वीरान और ख़ाली थी। साथ साथ वह गहरे पानी से ढकी हुई थी। गुप अंधेरा था।

► **फिर भी उस पर क्या मँडला रहा था?**

अल्लाह का रूह उस पर मँडला रहा था। ख़ुदा अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत से कुछ करने को था। इस जगह पर हम ख़ुदा के बारे में चार अहम बातें सीखते हैं। पहली बात,

## ख़ुदा कलाम का ख़ुदा है

लिखा है,

> फिर अल्लाह ने कहा, "रौशनी हो जाए" तो रौशनी पैदा हो गई।
>
> अल्लाह ने देखा कि रौशनी अच्छी है, और उसने रौशनी को तारीकी से अलग कर दिया। अल्लाह ने रौशनी को दिन का नाम दिया और तारीकी को रात का। शाम हुई, फिर सुबह। यों पहला दिन गुज़र गया।

► **क्या लिखा है कि ख़ुदा ने अपने हाथों से दुनिया को बनाया?**

नहीं। लिखा है कि उसने कहा, तब ही दुनिया पैदा हुई। उसने अपने कलाम से ही दुनिया को बनाया। वह ठेकेदार की तरह नहीं है जो ईंट और सीमेंट लेकर घर बना लेता है। नहीं, जहाँ कुछ नहीं था वहाँ

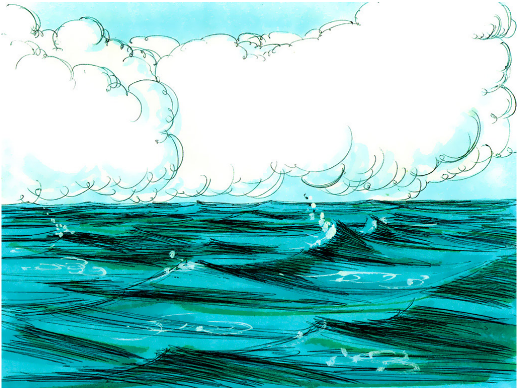

उसने फ़रमाया तो वह वुजूद में आया। अब हम एक और दिलचस्प बात सीखते हैं, यह कि

## ख़ुदा तरतीब का ख़ुदा है

► **ख़ुदा ने रौशनी के साथ एक और काम किया। वह क्या?**

उसने रौशनी को तारीकी से अलग कर दिया।

► **जो चीज़ों को अलग अलग करता है वह क्या करता है?**

वह चीज़ों को तरतीब देता है। चीज़ों को अलग अलग करने से ख़ुदा ने दुनिया को तरतीब दी। वह तरतीब और इंतज़ाम का ख़ुदा है। हर चीज़ के अंदर उसकी तरतीब, उसका ठप्पा लगा हुआ है। तब लिखा है,

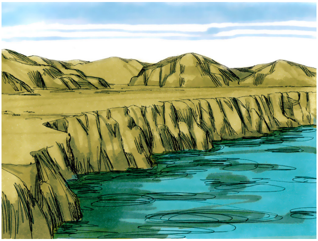

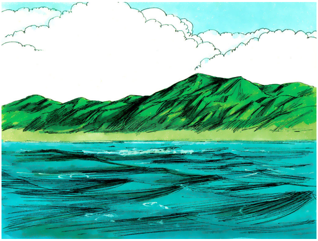

> अल्लाह ने कहा, "पानी के दरमियान एक ऐसा गुंबद पैदा हो जाए जिससे निचला पानी ऊपर के पानी से अलग हो जाए।" ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने एक ऐसा गुंबद बनाया जिससे निचला पानी ऊपर के पानी से अलग हो गया। अल्लाह ने गुंबद को आसमान का नाम दिया। शाम हुई, फिर सुबह। यों दूसरा दिन गुज़र गया।

► **अब अलग करने का एक और काम हुआ। वह क्या?**

ख़ुदा ने आसमान को यों बनाया कि वहाँ भी पानी था और ज़मीन पर भी। पानी का इंतज़ाम तैयार हो गया। फिर लिखा है,

> अल्लाह ने कहा, "जो पानी आसमान के नीचे है वह एक जगह जमा हो जाए ताकि दूसरी तरफ़ ख़ुश्क जगह नज़र आए।" ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने ख़ुश्क जगह को ज़मीन का नाम दिया और जमाशुदा पानी को समुंदर का। और अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है।

► **एक बार फिर अलग करने का काम हुआ। वह क्या?**

पानी एक जगह जमा हो गया। तब दूसरी तरफ़ ख़ुश्क ज़मीन नज़र आई।

► **यह क्यों ज़रूरी था?**

ताकि ख़ुश्क ज़मीन पर जीनेवालों के लिए रहने की जगह तैयार हो जाए। तीसरी बात,

## ख़ुदा अच्छी चीज़ों का ख़ुदा है

► **ख़ुदा ने अपने काम के बारे में क्या महसूस किया?**

यह कि वह अच्छा है।

► **यह बात हमारे लिए क्यों अहम है?**

जो दुनिया ख़ुदा ने बनाई है वह पूरे तौर से अच्छी है। इसलिए हम इसे एंजॉय कर सकते हैं। बेशक इसका मतलब यह नहीं कि हम इसे ग़लत इस्तेमाल करें। आगे लिखा है,

> फिर उसने कहा, "ज़मीन हरियावल पैदा करे, ऐसे पौधे जो बीज रखते हों और ऐसे दरख़्त जिनके फल अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते हों।" ऐसा ही हुआ। ज़मीन ने हरियावल पैदा की, ऐसे पौधे जो अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते और ऐसे दरख़्त जिनके फल अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते थे। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। शाम हुई, फिर सुबह। यों तीसरा दिन गुज़र गया।

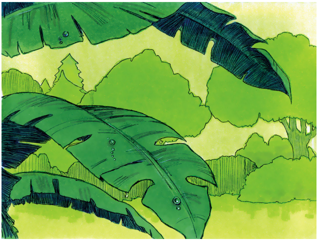
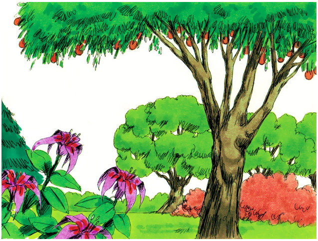

► **जानवरों और इनसान से पहले क्या तैयार हुआ?**

हरियाली।

► **यह क्यों?**

इसलिए कि हरियाली ज़मीन के जानदारों की बुनियाद है। यह चीज़ें न हों तो हम ज़िंदा नहीं रह सकते। अब एक और ज़रूरी चीज़ पैदा हुई। लिखा है,

> अल्लाह ने कहा, "आसमान पर रौशनियाँ पैदा हो जाएँ ताकि दिन और रात में इम्तियाज़ हो और इसी तरह मुख़्तलिफ़ मौसमों, दिनों और सालों में भी। आसमान की यह रौशनियाँ दुनिया को रौशन करें।" ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने दो बड़ी रौशनियाँ बनाईं, सूरज जो बड़ा था दिन पर हुकूमत करने को और चाँद जो छोटा था रात पर। इनके अलावा उसने सितारों को भी बनाया। उसने उन्हें आसमान पर रखा ताकि वह दुनिया को रौशन करें,

> दिन और रात पर हुकूमत करें और रौशनी और तारीकी में इम्तियाज़ पैदा करें। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। शाम हुई, फिर सुबह। यों चौथा दिन गुज़र गया।

► **यह भी अलग अलग करने का काम था। किस तरह?**

सूरज, चाँद और सितारों से हम दिन-रात और मुख़्तलिफ़ मौसमों, दिनों और सालों में इम्तियाज़ कर सकते है। हम सबको सूरज की रौशनी की ज़रूरत होती है ताकि हम जी सकें। साथ साथ इस इंतज़ाम से मौसम बदलते रहते हैं और हमें सालों के गुज़रने का एहसास होता है।

कुछ लोग सूरज, चाँदी और सितारों को देवता मानते हैं। बहुत लोग सितारों को परखने से अपनी क़िस्मत जान लेने की कोशिश करते हैं।

► **क्या कलाम के मुताबिक़ यह रौशनियाँ देवता हैं या हमारी क़िस्मत मुक़र्रर कर सकती हैं?**

बिलकुल नहीं। ख़ुदा ने यह चीज़ें बनाई और बस। यह सब अच्छी हैं मगर उसी के फ़रमान पर चलती हैं। चौथी बात,

## ख़ुदा बरकत का ख़ुदा है

आगे लिखा है,

> अल्लाह ने कहा, "पानी आबी जानदारों से भर जाए और फ़ज़ा में परिंदे उड़ते फिरें।" अल्लाह ने बड़े बड़े समुंदरी जानवर बनाए, पानी की तमाम दीगर मख़लूक़ात और हर क़िस्म के पर रखनेवाले जानदार भी बनाए। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है।
>
> उसने उन्हें बरकत दी और कहा, "फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। समुंदर तुमसे भर जाए। इसी तरह परिंदे ज़मीन पर तादाद में बढ़ जाएँ।" शाम हुई, फिर सुबह। यों पाँचवाँ दिन गुज़र गया।

► **अब पानी और हवा के जानदार बन गए हैं। इसके बाद ख़ुदा ने क्या किया?**

उसने उन्हें बरकत देकर फ़रमाया कि फलो-फूलो, तादाद में बढ़ते जाओ।

► **फलने-फूलने का इंतज़ाम किसने बनाया?**

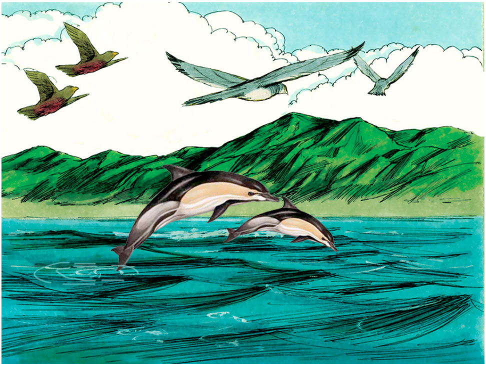

ख़ुदा ही ने यह इंतज़ाम बनाया। वही फलने-फूलने की बरकत देता है। तब लिखा है,

> अल्लाह ने कहा, “ज़मीन हर क़िस्म के जानदार पैदा करे : मवेशी, रेंगनेवाले और जंगली जानवर।” ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने हर क़िस्म के मवेशी, रेंगनेवाले और जंगली जानवर बनाए। उसने देखा कि यह अच्छा है।

एक बार फिर ख़ुदा को महसूस हुआ कि जो चीज़ें उसने बनाईं वह अच्छी हैं।

► **क्या हममें से कोई इस क़िस्म का काम कर सकता है?**

नहीं। हम एक भी ज़िंदा चीज़ नहीं बना सकते। हम सिर्फ़ जीनेवाली चीज़ों में रदो-बदल कर सकते हैं। यह तख़लीक़ के काम से बहुत फ़रक़ है।

ग़रज़ हम ख़ुदा के बारे में 4 बातें सीख चुके हैं। अब हम 4 बातें सीखेंगे जो ख़ुदा हमसे चाहता है। पहली बात, यह कि

## ख़ुदा के अच्छे नुमाइंदे हो

लिखा है,

> अल्लाह ने कहा, "आओ अब हम इनसान को अपनी सूरत पर बनाएँ, वह हमसे मुशाबहत रखे। वह तमाम जानवरों पर हुकूमत करे, समुंदर की मछलियों पर, हवा के परिंदों पर, मवेशियों पर, जंगली जानवरों पर और ज़मीन पर के तमाम रेंगनेवाले जानदारों पर।"
> यों अल्लाह ने इनसान को अपनी सूरत पर बनाया, अल्लाह की सूरत पर। उसने उन्हें मर्द और औरत बनाया।

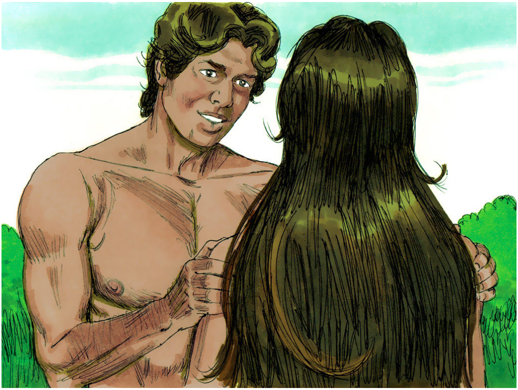

> अल्लाह ने उन्हें बरकत दी और कहा, “फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुमसे भर जाए और तुम उस पर इख़्तियार रखो। समुंदर की मछलियों, हवा के परिंदों और ज़मीन पर के तमाम रेंगनेवाले जानदारों पर हुकूमत करो।” [...]
> अल्लाह ने सब पर नज़र की तो देखा कि वह बहुत अच्छा बन गया है। शाम हुई, फिर सुबह। छटा दिन गुज़र गया।

► **यहाँ इनसान के बारे में एक चौंका देनेवाली बात पेश की जाती है। वह क्या?**

ख़ुदा ने उसे अपनी सूरत पर बनाया, यों कि वह उससे मुशाबहत रखे।

► **इसका क्या मतलब है? क्या इनसान अल्लाह के बराबर है? या क्या ख़ुदा का हम जैसा जिस्म है?**

यह कभी नहीं हो सकता। ऐसा सोचना भी मुनासिब नहीं है।

► **तो फिर इसका क्या मतलब है?**

दो बातों में वह ख़ुदा से मुशाबहत रखता है :

- जानवरों पर हुकूमत में।
- दुनिया पर इख़्तियार में।

► **इसमें इनसान किस तरह ख़ुदा की सूरत पर है?**

ख़ुदा असली हुक्मरान है, और इनसान दुनिया में उसका नुमाइंदा है। इसलिए उसे हर चीज़ पर इख़्तियार है। दूसरी बात जो ख़ुदा हमसे चाहता है : यह कि

## बरकत का बाइस हो

► **क्या हुकूमत करने का मतलब यह है कि इनसान को दुनिया को बरबाद करने की इजाज़त है?**

नहीं। जिस तरह ख़ुदा ने हर चीज़ अच्छी बनाई और चाहता है कि वह फले-फूले उसी तरह इनसान को भी होना है। वह अच्छे चरवाहे की तरह अपने सुपुर्द की गई चीज़ें सँभाले। तीसरी बात जो ख़ुदा हमसे चाहता है : यह कि

## ख़ुदा से अच्छा रिश्ता रखो

► **क्या पौधे और जानवर ख़ुदा की बातें समझ सकते या उससे बात कर सकते हैं?**

नहीं। इसलिए हमारा ख़ुदा से ताल्लुक़ फ़रक़ है। हम सोचकर बात कर सकते हैं। हम अपने ख़ालिक़ से भी बात कर सकते हैं। और ख़ुदा यह चाहता है कि हमारा उससे अच्छा रिश्ता हो। अब हम एक आख़िरी बात सीखते हैं। यह कि

## आराम से काम करो

लिखा है,

> यों आसमानो-ज़मीन और उनकी तमाम चीज़ों की तख़लीक़ मुकम्मल हुई। सातवें दिन अल्लाह का सारा काम तकमील को पहुँचा। इससे फ़ारिग़ होकर उसने आराम किया। अल्लाह ने सातवें दिन को बरकत दी और उसे मख़सूसो-मुक़द्दस किया। क्योंकि उस दिन उसने अपने तमाम तख़लीक़ी काम से फ़ारिग़ होकर आराम किया।

► **क्या आराम करने का मतलब है कि ख़ुदा ने कुछ न किया?**

नहीं। सातवें दिन भी ख़ुदा ने दुनिया को अपने हाथ में थामे रखा। फिर भी उसने साथ साथ आराम भी किया।

► **अगर उसने काम के साथ साथ आराम भी किया तो वह हमसे क्या चाहता है?**

वह चाहता है कि हम भी काम करने के साथ साथ आराम करें। वह जानता है कि हम सिर्फ़ उस वक़्त सही काम करेंगे जब हम बीच में आराम भी करें। जो इनसान आराम से काम नहीं करता वह काम करते करते घिस जाता या बिगड़ जाता है। उसे ऐसे औक़ात की अशद ज़रूरत है जब वह अपने ख़ालिक़ो-मालिक के सामने आराम कर सके। आराम हमें ताज़ादम होने देता है—जिस्मानी तौर पर भी और रूहानी तौर पर भी। ग़रज़ ख़ुदा अपने बारे में 4 बातें ज़ाहिर करता है :

- **ख़ुदा कलाम का ख़ुदा है।**

- **ख़ुदा तरतीब का ख़ुदा है।**
- **ख़ुदा अच्छी चीज़ों का ख़ुदा है।**
- **ख़ुदा बरकत का ख़ुदा है।**

साथ साथ वह हमसे 4 बातें चाहता है : यह कि

- **ख़ुदा के अच्छे नुमाइंदे हो।**
- **बरकत का बाइस हो।**
- **ख़ुदा से अच्छा रिश्ता रखो।**
- **आराम से काम करो।**

## तौरेत, पैदाइश 1:1–2:3

इब्तिदा में अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को बनाया। अभी तक ज़मीन वीरान और ख़ाली थी। वह गहरे पानी से ढकी हुई थी जिसके ऊपर अंधेरा ही अंधेरा था। अल्लाह का रूह पानी के ऊपर मँडला रहा था।

फिर अल्लाह ने कहा, “रौशनी हो जाए” तो रौशनी पैदा हो गई। अल्लाह ने देखा कि रौशनी अच्छी है, और उसने रौशनी को तारीकी से अलग कर दिया। अल्लाह ने रौशनी को दिन का नाम दिया और तारीकी को रात का। शाम हुई, फिर सुबह। यों पहला दिन गुज़र गया।

अल्लाह ने कहा, "पानी के दरमियान एक ऐसा गुंबद पैदा हो जाए जिससे निचला पानी ऊपर के पानी से अलग हो जाए।" ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने एक ऐसा गुंबद बनाया जिससे निचला पानी ऊपर के पानी से अलग हो गया। अल्लाह ने गुंबद को आसमान का नाम दिया। शाम हुई, फिर सुबह। यों दूसरा दिन गुज़र गया।

अल्लाह ने कहा, "जो पानी आसमान के नीचे है वह एक जगह जमा हो जाए ताकि दूसरी तरफ़ ख़ुश्क जगह नज़र आए।" ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने ख़ुश्क जगह को ज़मीन का नाम दिया और जमाशुदा पानी को समुंदर का। और अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। फिर उसने कहा, "ज़मीन हरियावल पैदा करे, ऐसे पौधे जो बीज रखते हों और ऐसे दरख़्त जिनके फल अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते हों।" ऐसा ही हुआ। ज़मीन ने हरियावल पैदा की, ऐसे पौधे जो अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते और ऐसे दरख़्त जिनके फल अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते थे। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। शाम हुई, फिर सुबह। यों तीसरा दिन गुज़र गया।

अल्लाह ने कहा, "आसमान पर रौशनियाँ पैदा हो जाएँ ताकि दिन और रात में इम्तियाज़ हो और इसी तरह मुख़्तलिफ़ मौसमों, दिनों और सालों में भी। आसमान की यह रौशनियाँ दुनिया को रौशन करें।" ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने दो बड़ी रौशनियाँ बनाईं, सूरज जो बड़ा था दिन पर हुकूमत करने को और चाँद जो छोटा था रात पर।

इनके अलावा उसने सितारों को भी बनाया। उसने उन्हें आसमान पर रखा ताकि वह दुनिया को रौशन करें, दिन और रात पर हुकूमत करें और रौशनी और तारीकी में इम्तियाज़ पैदा करें। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। शाम हुई, फिर सुबह। यों चौथा दिन गुज़र गया।

अल्लाह ने कहा, “पानी आबी जानदारों से भर जाए और फ़ज़ा में परिंदे उड़ते फिरें।” अल्लाह ने बड़े बड़े समुंदरी जानवर बनाए, पानी की तमाम दीगर मख़लूक़ात और हर क़िस्म के पर रखनेवाले जानदार भी बनाए। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। उसने उन्हें बरकत दी और कहा, “फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। समुंदर तुमसे भर जाए। इसी तरह परिंदे ज़मीन पर तादाद में बढ़ जाएँ।” शाम हुई, फिर सुबह। यों पाँचवाँ दिन गुज़र गया। अल्लाह ने कहा, “ज़मीन हर क़िस्म के जानदार पैदा करे : मवेशी, रेंगनेवाले और जंगली जानवर।” ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने हर क़िस्म के मवेशी, रेंगनेवाले और जंगली जानवर बनाए। उसने देखा कि यह अच्छा है।

अल्लाह ने कहा, “आओ अब हम इनसान को अपनी सूरत पर बनाएँ, वह हमसे मुशाबहत रखे। वह तमाम जानवरों पर हुकूमत करे, समुंदर की मछलियों पर, हवा के परिंदों पर, मवेशियों पर, जंगली जानवरों पर और ज़मीन पर के तमाम रेंगनेवाले जानदारों

पर।” यों अल्लाह ने इनसान को अपनी सूरत पर बनाया, अल्लाह की सूरत पर। उसने उन्हें मर्द और औरत बनाया। अल्लाह ने उन्हें बरकत दी और कहा, “फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुमसे भर जाए और तुम उस पर इख़्तियार रखो। समुंदर की मछलियों, हवा के परिंदों और ज़मीन पर के तमाम रेंगनेवाले जानदारों पर हुकूमत करो।”

अल्लाह ने उनसे मज़ीद कहा, “तमाम बीजदार पौधे और फलदार दरख़्त तुम्हारे ही हैं। मैं उन्हें तुमको खाने के लिए देता हूँ। इस तरह मैं तमाम जानवरों को खाने के लिए हरियाली देता हूँ। जिसमें भी जान है वह यह खा सकता है, ख़ाह वह ज़मीन पर चलने-फिरनेवाला जानवर, हवा का परिंदा या ज़मीन पर रेंगनेवाला क्यों न हो।” ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने सब पर नज़र की तो देखा कि वह बहुत अच्छा बन गया है। शाम हुई, फिर सुबह। छटा दिन गुज़र गया।

यों आसमानो-ज़मीन और उनकी तमाम चीज़ों की तख़लीक़ मुकम्मल हुई। सातवें दिन अल्लाह का सारा काम तकमील को पहुँचा। इससे फ़ारिग़ होकर उसने आराम किया। अल्लाह ने सातवें दिन को बरकत दी और उसे मख़सूसो-मुक़द्दस किया। क्योंकि उस दिन उसने अपने तमाम तख़लीक़ी काम से फ़ारिग़ होकर आराम किया।